RNI-UPHIN/2015/64643

ISSN - 2455-9520

वर्ष-7 अंक 23 मूल्य ₹ 25/-

Peer Reviewed Bilingual Monthly International Research Journal

बोधिसत्व बाबासाहेब टुडे

डॉ0 अम्बेडकर चिन्तन, बौद्ध दर्शन और सामाजिक विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय शोध मासिक पत्रिका

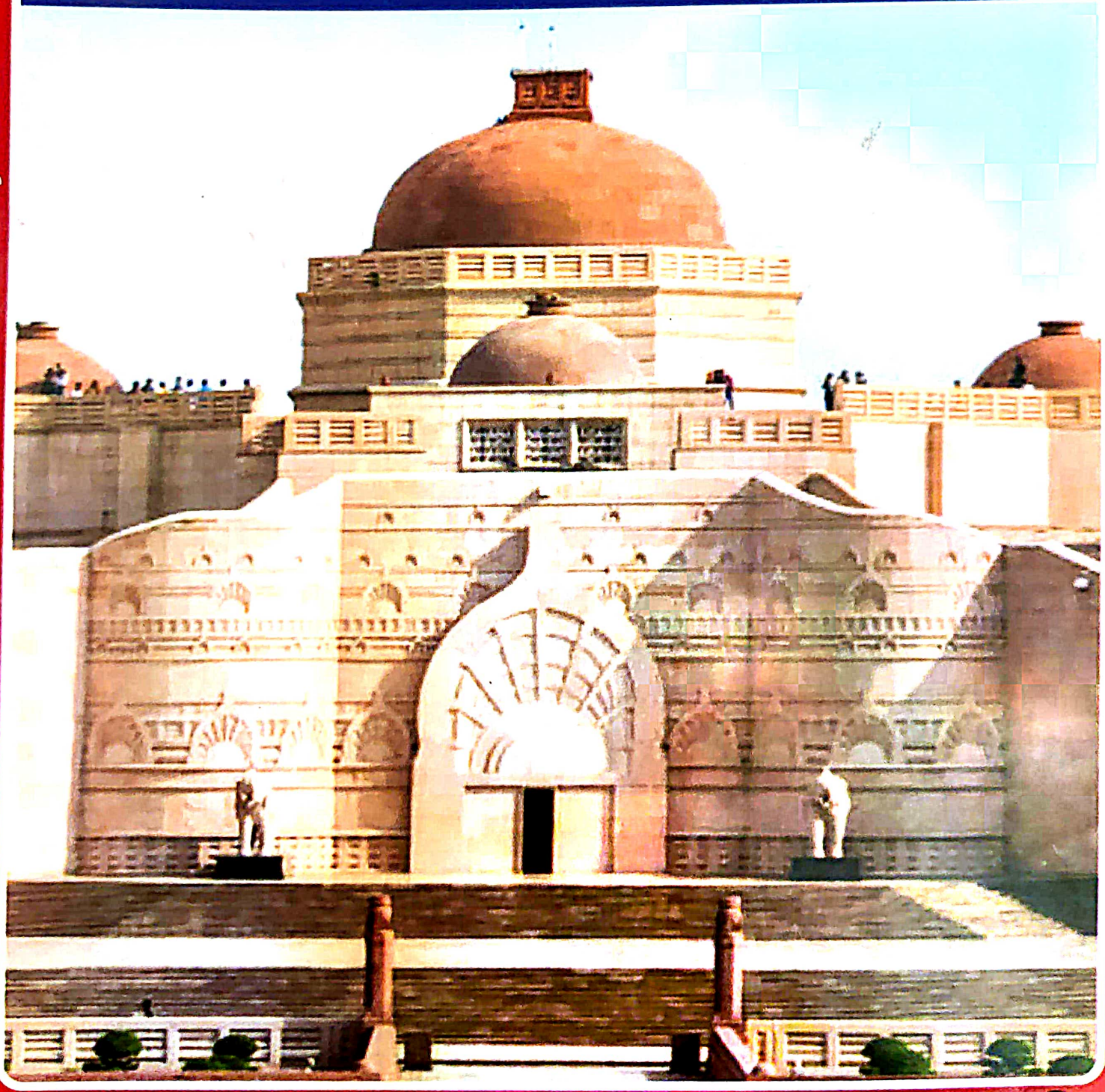

www.bodhisatvababasahebtoday.com

जुलाई 2021

ज्ञानप्रकाश जखमी
सम्पादक

संत रविदास के काव्य में दलित विमर्श

डॉ. सीताबाई नामदेव पवार

भारतीय समाज वर्ग में विभाजित होने के कारण अंतर्गत कला एवं सामाजिक संघर्ष यह स्वाभाविक है किंतु मानवी समाज में मानवहीनता एंव अमानवीय व्यवहार यह संघर्षता का मूल कारण दिखाई देता है। दुर्बल घटकों को अमानवीय सामाजिक बर्ताव सें सामना करना पड़ता है। पर स्थिति प्राचीन युग सें चली आ रही है। बीसवीं शताब्दी के पूर्व भारत में स्थित सरकार ने डिप्रेस्ड क्लास का शब्द प्रयोग का 'पददलित एवं दलित' शब्द का प्रयोग प्राचीन युग से चले आ रहे सामाजिक वर्ग जिसे शुद्र, अशुद्र, चांडाल, अस्पृश्य आदि वर्गों के लिए किया है। भले ही दलित शब्द प्राचीन है क्योंकि दुर्बल पीडित शोषित एवं अस्पृश्य शुद्र, अतिशुद्र आदि समाज के वर्गों को अमानवीय सामाजिक यातना, दर्द, वेदना एवं उनको सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि समस्या हमें प्राचीन युग से लेकर आज तक हिंदी साहित्य के इतिहास के हर युग में परिलक्षित होती है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर दलित एवं दलित साहित्य जोरों-शोरों में हर भारतीय भाषा के साहित्य में विचार विमर्श होने लगा। जिसका असर हमें मानवीय समाज के हर क्षत्र में दिखाई देता है। दलित साहित्य, दलित सामाजिकता, दलित राजनीतिकता, दलित आर्थिकता, दलित धार्मिक एवं सांस्कृतिकता आदि संकल्पना कार्यान्वित होने लगी। साहित्य जो दलितों के बारे में उनके दुःख, दैन्य और समस्या को लेकर उन्होंने लिखा है। दलितों के वोट बॅक सामने रखकर निर्माण की गई राजकीय संकीर्णता वह दलित राजनीतिकता दलित सामाजिकता जिससे दलितों को सामाजिक स्थिति स्पष्ट होती है, दलित आर्थिकता जिससे दलितों की आर्थिक स्थिति एवं उनका आर्थिक जीवनमान सामने आता है। दलित धार्मिकता एवं सांस्कृतिक जिससे दलित की धार्मिकता एवं सांस्कृतिक स्थिति का अभ्यास होता है। आदि संकल्पनाओं का अध्ययन हम हिंदी साहित्य के हर युग में करते रहे है।

मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में निर्गुण और सगुण साहित्य की उत्पत्ती ही दलित साहित्य का परिणाम है। निर्गुण साहित्य जो आज के दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत रहा है। वह समकालीन अस्पृश्य समाज जिसे हम आज दलित समाज से जानते है। निर्गुण साहित्य ही उसका पथप्रदर्शक था। मध्ययुगीन समाज की धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। हिन्दूओं का उच्च वर्ग अहंकारी एवं विलासी था। उस समय के समाज में वर्ग, वर्ण और जातिभेद पर्याप्त अत्याचार का कारण था इससे भी आधिक विचित्र बात यह थी कि तत्कालीन शासक वर्ग लूट एवं अपार धन के कारण विलासिता के गर्त में खोया हुआ था अमीर अत्याचार करते हैं और सहते थे। जाति पाति, वर्णभेद, वर्गभेद और मिथ्याडंबर अंधविश्वास आदि सामाजिक

समस्याओं के कारण तत्कालीन समाज में अस्पृश्य, पीडित, शोषित एवं दुर्बल आदि सामाजिक वर्ग का जीवन मानव से बदत्तर होकर अंधकार में अपने नशीब को कोसता पिरता था। ऐसी स्थिति में तत्कालीन समाज के संत कवियों ने जाति-पाति और भेदभाव का डटकर विरोध किया। उन्होंने तत्कालीन रूढी, परंपरा, मिथ्याआडंबर एव अंधविश्वासों की कटू आलोचना भी की है। संत रविदास ने हिंदुओ को वर्ण व्यवस्था पर कुटाराघात किया था। जाति, वर्णभेद एवं वर्गभेद को मिटाकार हिंदु मुसलमानों में सामजंस्य प्रस्थापित करने की कोशिश की। यह ओर दुःख कि बात है कि संत रविदास को भक्त के रूप में प्रस्थापित करने की व्यर्थ चेष्टा हिंदी साहित्यकारों ने की है। वो शायद यह नहीं जानते है कि संत रविदास को एक सच्चे समाज सुधारक भी कहा जाता है। क्योंकि उन्होंने हिंदी साहित्य में प्रथमतः मानवता की नींव निर्माण कर दलित वर्ग की करूणा एवं वेदना की साहित्यिक रूप देकर अमानवीय अत्याचार करनेवालों को मानवता का पाठ पढाया। वो खुद दलित होकर भी उन्होंने जातिव्यवस्था की नींव को हिला दिया। उनके संपूर्ण साहित्य में दीन-हीन, शोषित, पीडित, दलित वर्ग का प्रतिबिंब हमें परीलक्षित होता है। अन्याय अत्याचार के खिलाफ जाति धर्म, वर्ग आदि भेदभाव के खिलाफ, सामाजिक असमानता के खिलाफ, राजकीय, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि समानता के खिलाफ अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने एक जनचेतना आंदोलन खड़ा कर दिया। उनके काव्य हमें दलित विमर्श की शुरूवात दिखाई देती।

जिस युग की पीठिका में रविदास की वाणी का जन्म हुआ। उस युग में अशांति और अव्यवस्था का बोलबाला था। समाज उच्च और निम्न वर्ग में विभाजित हुआ था। निम्न स्तर की मानेवाली जातियाँ दुःखी थी। उच्च जातियों के अत्याचार से पीडित थीं उनपर सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक हर तरीके के अत्याचार होते थे। उनका युग मानवीय भेदभाव से सराबोर था। तत्कालीन चार वर्ण-ब्राम्हण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में बाँट दिया और आपसे में हीन भावना को उजागर कर मानवतावाद का ऱ्हास किया वहा संत रविदास ने अपने काव्य में वर्णवाद का खंडन करते हुए समानता का पक्ष लेकर कहा है-

रविदास जात मत पूछहू, का जात का पात।
बामन खत्री बैस सूद्र, सभन की एकै जात।।

सामाजिक जाति व्यवस्था ने मानवता को डस लिया है। मनुष्य जात पात के चक्कर में अपने मानवीय तत्वों को खो बैठा है। संत रविदास जाति विरोधी थे उनका मानना था, कि ब्राम्हणवाद के विनाश के बिना जाति संभव नहीं है तथा जाति विनाश के बगैर मानवता नहीं आ सकती। इसी भेदभाव का तिरस्कार कर ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र इन चातुवर्णी को एक समान मानते है। उनके मन से मनुष्य मात्र एक समान है। समूचे विश्व धरातल पर मानव ही एक जाति है और मानवतावाद ही एक धर्म है। वहा न कोई जाति है, न कोई वर्ण है वे कहते है।

पात-पात में पात है, ज्यों केलन के पात।
जात-जात में जात है, त्यों हिंदू के जात।।

जिस प्रकार केले का पेड अपने तने में पत्तों की परतें एक इकाई के रुप में अपना अस्तित्व प्रकट करता है। वैसे मनुष्य भी है यदि पत्तों की एक परत सामाजिक विकास को यदि इकाई के अस्तित्व उसके विकास से जुडा है। तथाकथित चार वर्ण एवं उनके जातियों में जन्में सभी लोगों की जाति एक ही है ओर वो है मनुष्य जाति।

रविदास युगीन समाज मानवीय समाज धर्म के नाम पर हिंदू-मुसलमान, ईसाई जाति के नाम पर, वर्ण के नाम पर तथा गरीब-अमीर, शिक्षित-अशिक्षित, राजा-प्रजा इन सारे दलितों के नाम पर बँटा हुआ था। हिंदू-मुसलमान धर्मभेद अपनी चरमसीमा पर था। लोग एक दुसरे के

जान के प्यासे हुए थे। ऐसी स्थिती में संत रविदास हिंदूओं के साथ प्रेम, मुसलमानों के साथ दोस्ती करने का उपदेश रविदास देते हैं।-

मुसलमान सो दोस्ती, हिंदुअन सो कर प्रीत।
रविदास ज्योती सभ राम की सभ है अपने मीत।।

रविदास किसी एक धर्म को न माननेवाले देव-देवताओं को न माननेवाले ऐसे संत थे कि खुद को किसी एक जाति की श्रृंखला में न बांधते हुए मानवधर्म को ही मानवीय एकता का प्रेरणास्त्रोत बनकर अपने काव्य से धर्मभेद के खिलाफ उन्होंने लोगों को जागृत किया था। कोई धर्मभेद ना रखते हुए हिंदू और मुसलमान आदि धर्म के लोगों ने सौहार्दता पूर्वक व्यवहार का समाज में प्रदर्शन करना चाहिए। उनका समकालीन समाज धार्मिकभेद, जातिभेद, वंशभेद, उच-नीच आदि कुरीतियों से भ्रष्ट था। सामाजिक, सर्सेंतिक, धार्मिक और जातिय कट्टरता समाज में कूट-कूटकर भरी हुई थी। ऐसी स्थिति में धार्मिक, जातिय वंशीय और सामाजिक कट्टरता के खिलाफ संत रविदास ने मानवीय एकता के नींव पर आधारित अपने काव्य के माध्यम से एक दुर्लभ जन आंदोलन खड़ा किया था। समकालीन प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने टीकात्मक स्वर को वाणी में तबदील कर समाज को कुरीतियों से शिक्षित बनाने का काम संत रविदास ने किया।

संत रविदास के दर्शन के अनुसार समस्त मानवता ही एक जाति है और जब तक जातिवाद नहीं मिटता, भावनात्मक एकता पैदा नहीं हो सकती। उन्होंने जाति और वर्ग के भेदभाव को मिटाकर भावनात्मक एकता की नींव डालते हुए मानव मात्र की एकता, स्वतंत्रता एवं भाईचारे के प्रति आवाज उठाई। उसके लिए अनेक संघर्ष किये जो वर्तमान को कसौटियों पर भी खरे उतरते हैं। अपनी सरल और सुबोध वाणी के कारणों से प्रदर्शित समकालीन स्थिति में मानवता और मानवप्रेम का संदेश देते हैं।

युगीन समाज में वर्ण एवं जातिव्यवस्था के साथ-साथ एक और शत्रु था पराधीनता, जो मानव को गुलाम बनाकर उसका अस्तीत्व मिटा देता था। उसकी स्वतंत्रता, आत्मगौरव और स्वाभीमान को नष्ट कर मानवीयता का ऱ्हास कर देता था। संत रविदास विनम्र भाव से कहते है कि है मित्र इस संसार में किसी पराधीनता गुलामी स्वीकारना, उसके अधीन रहना सबसे बड़ा पाप है लेकिन रविदास कहते हैं कि जो व्यक्ति गुलामी में जीवन व्यतीत करता है, उससे कभी भी कोई प्रेम नहीं करता-

पराधीनता पाप है, जान लेहू रे मीत।
रविदास दास पराधीन सौ कौन करै है प्रीत।।
पराधीन को दीन क्या. पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन कौ, सबही समझै होन।।

संत रविदास ने तत्कालीन समाज की मानसिकता की सही सही परख की थी। वे परावलंबन के प्रति अपना विरोध दर्शाते हुए कहते हैं कि स्वावलंबन में ही सच्चा सुख है। परावलंबन से और कोई पाप है ही नहीं।

संदर्भ

1) रविदास दर्शन दोहा 120
2) रविदास दर्शन दोहा 128
3) रविविदास दर्शन दोहा 147
4) रविदास दर्शन दोहा 192
5) रविदास दर्शन दोहा 193

अध्यक्ष स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इंदापुर (महाराष्ट्र)

दलित साहित्यकार मा0 सूरजपाल चौहान जी को उनकी कविता के साथ विनम्र आदरांजलि

बोतल महँगी है तो क्या,
थैली बहुत ही सस्ती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

ब्रह्मा विष्णु इनके घर में,
कदम-कदम पर जय श्रीराम।
रात जगाते शेरोंवाली की
करते कथा सत्यनाराण..।
पुरखों को जिसने मारा था,
उनकी ही कैसिट बजती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

तू चूहड़ा और मैं चमार हूँ,
ये खटीक और वो कोली।
एक तो हम कभी हो ना पाए,
बन गई जगह-जगह टोली।
अपने मुक्तिदाता को भूले,
गैरों की झाँकी सजती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

हर महीने वृन्दावन दौड़े,
माता वैष्णो छह-छह बार।
गुडगाँवा की जात लगाता,
सोमनाथ को अब तैयार।
बेटी इसकी चार साल से,
दसवीं में ही पढ़ती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

बेटा बजरँगी दल में है,
बाप बना भगवाधारी
भैया हिन्दू परिषद में है,
बीजेपी में महतारी।
मन्दिर-मस्जिद में गोली,
इनके कन्धे से चलती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

शुक्रवार को चौंसर बढ़ती,
सोमवार को मुख लहरी।
विलियम पीती मंगलवार को,
शनिवार को नित जहरी।
नौ दुर्गे में इसी बस्ती में,
घर-घर ढोलक बजती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

नकली बौद्धों की भी सुन लो,
कथनी करनी में अन्तर।
बात करें हैं बौद्ध धम्म की,
घर में पढ़ें वेद मन्तर।
बाबा साहेब की तस्वीर लगाते,
इनकी मैया मरती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

औरों के त्यौहार मनाकर,
व्यर्थ खुशी मनाते हैं।
हत्यारों को ईश मानकर,
गीत उन्हीं के गाते है।
चौदह अप्रैल को बाबा साहेब की जयन्ती,
याद ना इनको रहती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

डोरीलाल है इसी बस्ती का,
कोटे से अफसर बन बैठा।
उसको इनकी क्या चिन्ता अब,
दूजों में घुसकर जा बैठा।
बेटा पढ़कर शर्माजी, और
बेटी बनी अवस्थी है।
ये दलितो की बस्ती है।।

भूल गए अपने पुरखों को,
महामही इन्हें याद नहीं।
अम्बेडकर, बिरसा, बुद्ध,
वीर ऊदल की याद नहीं।
झलकारी को ये क्या जानें,
इनकी वह क्या लगती है।
ये दलितो की बस्ती है।।

मैं भी लिखना सीख गया हूँ,
गीत कहानी और कविता।
इनके दुरूख दर्द की बातें,
मैं भी भला था, कहाँ लिखता।
कैसे समझाऊँ अपने लोगों को,
चिन्ता यही खटकती है।
ये दलितों की बस्ती है।

डी-20/109, एस.टी.सी.
कालोनी, नई दिल्ली-17